International Journal of Sanskrit Research 2024; 10(2): 28-31

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2024; 10(2): 28-31
© 2024 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 20-12-2023
Accepted: 27-01-2024

सूर्य प्रकाश
शोधार्थी, संस्कृत एवं प्राच्यविद्या अध्ययन संस्थान, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, भारत

Corresponding Author:
सूर्य प्रकाश
शोधार्थी, संस्कृत एवं प्राच्यविद्या अध्ययन संस्थान, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, भारत

वैश्विक परिदृश्य में महाभारत की उपादेयता

सूर्य प्रकाश

प्रस्तावना

महाभारत, भारतीय संस्कृति के एक महत्वपूर्ण और प्रमुख ग्रंथ है, जिसमें धर्म, युद्ध, प्रेम, पराक्रम, और नीति के विभिन्न पहलुओं का विवरण है। यह कथा महाभारत युद्ध के पहले और उसके बाद के घटनाक्रमों को समेटती है, जिसमें कौरवों और पांडवों के बीच की युद्ध की कथा समाहित है। इसके साथ ही तत्कालीन भारतीय समाज, संस्कृति, सभ्यता, वेद, उपनिषद, इतिहास, पुराण, चातुर्यवण्र्य विधान, ग्रह, नक्षत्रादि, आर्यावर्त संस्कृति की गौरवगाथा की ओर भी संकेत प्राप्त होता है।

यह महाकाव्य भारतीय साहित्य के प्रमुख काव्य ग्रंथों में से एक है और भारतीय संस्कृति में गहरा प्रभाव छोड़ता है। महाभारत में सिखाए गए धार्मिक और नैतिक सिद्धांत आज भी मानवता के लिए महत्वपूर्ण हैं। उपर्युक्त तथ्य महाभारत की महनीयता को पारदर्शित करता है। व्युत्पत्ति की दृष्टि से देखें तो महाभारत शब्द आख्यान शब्द से सम्बंधित है अर्थात् ऐतिहासिक काव्य।[1] भारत-सावित्री में डॉ0 वासुदेवशरण अग्रवाल ने महाभारत के नामकरण व व्युत्पत्ति के सम्बन्ध में लिखा है कि ''कौरव व पाण्डव दोनों भरतवंशी हैं इसलिए वे भारत के नाम से जाने जाते हैं। भरतवंशियों के संग्राम या युद्ध का नामकरण भी भारत ही किया गया है।'' पाणिनीय सूत्र के अनुसार योद्धाओं के नाम से युद्ध का नाम रखा जाता था। संग्रामे प्रयोजनयोद्धृभ्यः[2] किसी युद्ध के उद्देश्य या उसमें भाग लेने वालों को इंगित करने के लिए, प्रथम विभक्ति में शब्द के साथ एक उपयुक्त तद्धितप्रत्यय जोड़ा जा सकता है जो युद्ध के उद्देश्य या भाग लेने वालों का प्रतिनिधित्व करता है।

महाभारत युद्ध का उल्लेख महाभारत के अश्वमेधिक पर्व में मिलता है।[3] महान भारत युद्ध वास्तव में भारत में लोगों के एक समूह, भरत के बीच एक बड़ी लड़ाई है। इसके अतिरिक्त महाभारत के आदिपर्व में महाभारताख्यम्[4] प्रयुक्त शब्द के आधार पर भारतों के महान संग्राम की कहानी या महाभारताख्यानों का संक्षिप्त स्वरूप ही महाभारत है।[5]

महाभारत भारत का एक अत्यंत महत्वपूर्ण ग्रंथ है। इसका रोजमर्रा की जिंदगी और आध्यात्मिक जीवन दोनों पर बड़ा प्रभाव पड़ा है। यह हमें भारतीय संस्कृति, सभ्यता और हिंदू धर्म के बारे में बहुत कुछ बताता है। इसे बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है क्योंकि यह मार्गदर्शन देता है कि लोगों को कैसा व्यवहार करना चाहिए और उनकी जिम्मेदारियाँ क्या हैं। इसमें जीवन के सभी पहलुओं को शामिल किया गया है, जिसमें राजा, सामान्य लोग और यहां तक कि वे लोग भी शामिल हैं जो प्रबुद्ध बनना चाहते हैं।

यह एक विश्वकोश की तरह है क्योंकि इसमें भारत के इतिहास, धर्म और दर्शन के बारे में बहुत सारी जानकारी है। हिन्दू मान्यताओं, पौराणिक संदर्भो एवं स्वयं महाभारत के अनुसार इस काव्य का रचनाकार वेदव्यास जी को माना जाता है। इस काव्य के रचयिता वेदव्यास जी ने अपने इस अनुपम काव्य में वेदों, वेदांगों और उपनिषदों के गुह्यतम रहस्यों का निरुपण किया हैं। महाभारत में लिखा है कि यह ग्रन्थ एक साथ ही अर्थशास्त्र, धर्मशास्त्र तथा कामशास्त्र है।

अर्थशास्त्रमिदं प्रोक्तं धर्मशास्त्रमिदं परम्।
कामशास्त्रमिदं प्रोक्तं व्यासेनामित बुद्धिना।[6]

इसके स्वरूप को विश्वकोषात्मक रूप में स्वीकारा गया है।[7] यह सम्पूर्ण भारतीय साहित्य एवं कथाओं का मूल आधार है।

अनाश्रित्येदमाख्यानं कथा भूमि न विद्यते।
आहार मनपाश्रित्य शरीरस्यैव धारणम्।।[8]

इससे बृहद् कोई रचना नहीं हो सकती।
अस्य काव्यं कवयो न समर्था विशेषणे।
साधोरिव गृहस्थस्य शेषास्त्रय् इवाश्रयाः।।[9]

कवियों को यह मार्ग प्रदान करता है।
इतिहासोत्तमादस्याज्जान्ते कवि बुद्धयः।
पंचभ्यइव भूतेभ्यो लोक संविधयस्तयः॥[10]

इसके प्रत्येक शब्द अमृत के उस मानसरोवर के समान है जिसमें रमण करने वाला सहृदय हंस कभी भी तृप्त नहीं हो सकता। महाभारत की उपयोगिता इसलिए भी अधिक मानी जाती है क्योंकि इसमें भारतीय संस्कृति के प्राण अथवा धर्म को विस्तृत रूप से स्पष्ट किया गया है। महाभारत नामक कहानी में, एक भाग है जहां वे पुरुषार्थ चतुष्टय और वर्णाश्रम नामक चीज़ के बारे में बात करते हैं। ये वास्तव में यह समझाने के तरीके हैं कि लोग एक अच्छा और सार्थक जीवन कैसे जी सकते हैं। यह उन्हें अच्छे विकल्प चुनने और खुश रहने में मदद करने के लिए एक मार्गदर्शक की तरह है। यह उन्हें अपने कर्तव्यों का पालन करने, निष्पक्ष और दयालु होने और जीवन में अपना उद्देश्य खोजने जैसी चीजों के बारे में सिखाता है। महाभारत से यह भी सिखने को मिलता है कि धर्म से देश की उन्नति होती है तथा अधर्म से उसका विनाश होता है।

धर्म शाश्वत एवं चिरस्थायी है इसलिए लोभ या भयवश कभी भी धर्म का परित्याग नहीं करना चाहिए।

न जातु कामान्न भयान्न लोभाद् धर्मत्येजेज्जीवितस्यापिहेतोः।
धर्मो नित्यः सुख दुखे त्वनित्ये, जीवो नित्यो हेतुरस्य त्वनित्यः।।[11]

कर्म के महत्त्व को बताते हुए व्यास ने कहा है कि ''कर्म से विमुख मानव, मानव की पदवी से सदा के लिए वंचित रह जाता है, इसलिए धरती पर जब तक रहना है, मनुष्य को कर्म में संलग्न रहना चाहिए। भारतभूमि कर्मभूमि है और कर्म का फल प्रत्येक मनुष्य को स्वर्ग में प्राप्त होता है।[12] महाभारत में युद्ध का वर्णन होने के कारण यह वीर रस के काव्य के रूप में जाना गया, परवर्ती कवियों के लिए यह उपजीव्य ग्रन्थ के रूप में प्रसिद्ध हुआ। महाभारत में धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष-इन चारों पुरुषार्थ के साधनों का इतना व्यापक विवेचन हुआ है कि इसके अतिरिक्त कभी भी कुछ नवीन सामग्री नहीं प्राप्त होती।

धर्मेचाऽर्थे च कामे च मोक्षे च भरतर्षभ।
यदिहास्ति तदन्यत्र यन्ने हास्ति न तत्र क्वचित्।।[13]

वैशम्पायन ने इस ग्रन्थ की प्रशंसा करते हुए कहा है कि महाभारत धर्मशास्त्र, अर्थशास्त्र और मोक्षशास्त्र है।

धर्मशास्त्रामिदं पुण्यं अर्थशास्त्रमिदंपरम्।
कामशास्त्रमिदं प्रोक्तं व्यासेनामित बुद्धिनाम्।।[14]

महाभारत में वर्णित है कि ''अपने धर्म के लिए प्राण त्याग देने में लेशमात्र भी संकोच नहीं करना चाहिए। कहा भी गया है गीता में स्वधर्मो निधनः परधर्मो भयावहः।[15]
अर्थ की तुलना में महाभारत के उद्योगपर्व में धन को परमधर्म बताया गया है और कहा गया है कि निर्धन व्यक्ति का जीवन मृतक के समान है।

धनमाहुः परंधर्म धनेसर्व प्रतिष्ठितम्।
जीवन्ति धनिनो लोकेमृता ये त्वधना नराः।।[16]

भीष्म ने महाभारत में यह भी बताया कि यदि काम धर्ममूलक नहीं है तो वह भी नाश का कारण होता है। उन्होंने धर्म को श्रेष्ठ, अर्थ को मध्यम तथा काम को दोनों से निम्न कहा है –

धर्मो राजन् गुणः श्रेष्ठो मध्यमो ह्यर्थ उच्यते।
कामो यवीयानिति च प्रवदन्ति मनीषिणः।।[17]

मोक्ष को महाभारत का मुख्य प्रतिपाद्य कहा जाता है। मोक्ष की प्रतिष्ठापना इस ग्रन्थ में अनेक स्थलों पर दिखायी देती है जैस भगवद्गीता[18], पराशरगीता[19], हंसगीता[20], अनुगीता[21], ब्राह्मणगीता[22] इत्यादि। अनुगीता में तो मोक्ष को अमृत कहा गया है।[23]

महाभारत की रचना व्यास ने इसी दृष्टिकोण से किया था कि मानव जाति इस संसार के नाना प्रपंचात्मक तथा निःसारता को समझ सके और उनमें वैराग्य की प्रवृत्ति जागृत हो तथा वे मोक्ष के लिए प्रयत्नशील हो सकें। महाभारत की महत्ता इसमें है कि इसकी कथा को श्रवण करने मात्र से अन्य किसी भी कथा को सुनने की इच्छा नहीं होती। यह विशेषता इस ग्रन्थ के महत्ता तथा व्यापकता का परिचायक है और इस तथ्य की उद्घोषणा ग्रन्थकार ने स्वयं की थी-

श्रृत्वात्विदमुपाख्यानं श्राव्यमन्यत्र रोचते।
पुंस्को किलगिरं श्रुत्वा रूक्षा ध्वांक्षस्य वागिवा।।[24]

महाभारत में मानव जगत के कल्याणार्थ आचार-संहिता के पालन पर विशेष रूप से बल दिया गया है। अनुशासनपर्व में तो पुरुषार्थ को दैव से श्रेष्ठ बताया गया है और कहा गया है कि ''जिस प्रकार बीज खेत में बिना बोये फल नहीं दे सकता, उसी प्रकार दैव भी बिना पुरुषार्थ के सिद्ध नहीं हो सकता।'' पुरुषार्थ खेत है तो दैव बीज है।

यथा बीजं बिना क्षेत्रयुप्तं भवन्ति निष्फलम्।
तथा पुरुषकारेण बिना दैवं न सिध्यति।
क्षेत्रं पुरुषकारस्तु दैवं बीजमुदाहृतम्।
क्षेत्रबीजम समायोगात् ततः सस्यं समृद्धयते।।[25]

मनुष्य को अपने किये गये कर्म का फल भुगतना पड़ता है अकृत कर्म का नहीं। सुख प्राप्ति हेतु सदा शुभ कर्म ही करना चाहिए।

शुभेन कर्मणा सौख्यं दुःखं पापेन् कर्मणा।
कृतं फलति सर्वत्र नाकृतं भुज्यते क्वचित्।।[26]

महाभारत में परमात्मा की व्यापकता का निरूपण करते हुए कहा गया है कि ब्रह्म सभी जगह और प्रत्येक परिस्थितियों में विद्यमान है।

यस्मिन् सर्वं यतः सर्वं सर्वं सर्व त्तश्च यः।
यश्च सर्वमयो देवः तस्मै सर्वा त्मने नमः।।[27]

उपरोक्त तथ्यों से स्पष्ट है कि महाभारत की महत्ता इसलिए भी है कि इसमें विभिन्न संस्कृतियों का समन्वय, राष्ट्रीय भावना का उदय, आसुरी प्रवृत्तियों के दमन का प्रयास, भौगोलिक अनेकता में एकता, जीवन दर्शन की व्यावहारिक दृष्टि से व्याख्या, अपने अधिकारों के प्रति जागरूकता, राजनीति, कूटनीति, छद्मनीति तथा अनीति का व्यावहारिक प्रदर्शन, राजधर्म का सर्वांगीण निरूपण, आख्यान साहित्य का अक्षयकोष, नीतिशास्त्र के बहुमूल्य नीति एवं चतुर्वर्ग की सभी समस्याओं का समाधान सरलतापूर्वक मिल जाता है। इस ग्रन्थ के अवलोकन से यह स्पष्ट होता है कि ग्रन्थ में विरूपता में एकरूपता, अनेकता में एकता, विश्रृंखलता में समन्वय, व्यवहार में आदर्श, अशान्ति में शांति, प्रेम में श्रेय और धर्मार्थ में मोक्ष का समन्वय है।[28]

References

1. इण्डियन विजिडम डॉ0 मोनियर विलियम-हिंदी अनुवादक डॉ0 रामकुमार राय पृष्ठ-362
2. अष्टाध्यायी 4-2-56
3. महाभारत, आश्वमेधिक पर्व 81/8
4. हाभारत, आदिपर्व 56/30
5. भारत सावित्री-वासुदेव शरण अग्रवाल पृष्ठ-3
6. महाभारत, आदिपर्व 2/28-
7. महाभारत, आदिपर्व 1/62-70
8. महाभारत, आदिपर्व 2/37
9. महाभारत, आदिपर्व 2/390
10. महार्षि आदिपर्व 2/385
11. महाभारत, स्वर्गारोहण पर्व 5/63
12. महाभारत, आश्वमेधिक पर्व 43 /27
13. महाभारत, आदिपर्व 92/53
14. महाभारत, आदिपर्व 62/23
15. श्रीमद्भवगद्गीता 3/35
16. महाभारत, उद्योग पर्व 71/31
17. महाभारत, शांतिपर्व 167/8
18. महाभारत, भीष्म पर्व अ0 24-42.
19. महाभारत, शान्तिपर्व अध्याय 290-298
20. महाभारत, शान्तिपर्व अध्याय 299
21. महाभारत, आश्वमेधिकपर्व 19/16
22. महाभारत, आश्वमेधिक पर्व 20/34

23. महाभारत, आश्वमेधिक पर्व 19/60
24. महाभारत, आदिपर्व 2/84, 62/53
25. महाभारत, अनुशासनपर्व 6 /7, महाभारत, अनुशासनपर्व 6/8
26. महाभारत, अनुशासनपर्व 6/10
27. महाभारत, शांतिपर्व 47/84
28. संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-बलदेव उपाध्याय, पृ0 73